जयपुर रग्स के एन के चौधरी के अनुसार

Collective Intelligence से ही बढ़ता है बिजनस

जयपुर/नफा नुकसान टीम

किसी भी बिजनस की आधारशिला एक व्यक्ति रखता है और उसका अपना विजन होता है। पर यह सच है कि उस व्यक्ति का विजन एक सीमित दायरे वाला होता है और कारोबार में मिली तनिक सफलता ही उसे सेल्फ-सेंटर्ड कर देती है और वह अपने आगे फिर किसी को कुछ नहीं समझता।ऐसी स्थिति में बिजनस भले ही कुछ वर्ष के लिए मुनाफा देने वाला बना रहे, लेकिन वह दीर्घायु नही होता। बिजनस के लाभ को दीर्घायु बनाने का पहला मंत्र है collective intelligence. अर्थात बिजनस में जब तक साझा बौद्धिक शक्तियां शामिल नहीं होंगी तब तक बिजनस एक डायमेंसन में ही चलता रहेगा।यह कहना है जयपुर रग्स के प्रवर्तक एन के चौधरी का।

कहते हैं कि वक्त के साथ बिजनस के तौर तरीके से जिसने बदले वह जीत में रहता है और दूसरी बड़ी बात बिजनस में खुद की ईगो को परे रखना होता है।बल्कि खुद से जितना कनेक्टरहेंगे बिजनस उतना ही बेहतर होता चला जायेगा। बिजनस वस्तुत: होलनैस का नाम है।बिजनस में जब भी ईगो या ग्रीडनैस अर्थात लालच का प्रवेश हो जाता है, समझ लीजिये उसके पतन का दौर शुरू हो गया है।हम कुदरत को देखते हैं तो उसमें साझा शक्तियां हैं और यह collective intelligence ही बिजनस को आगे बढ़ाती है।

जयपुर रग्स का उदाहरण देकर वे बताते हैं कि यूं भले ही यह बिजनस मैनें शुरू किया हो लेकिन मैंने कभी इसे अपना नहीं समझा बल्कि इस बिजनस का एक अलग माड्यूल विकसित किया। चूंकि मेरा बिजनस कारपेट उत्पादन का है और मुझे लगा कि इसमें जब तक काम करने वाले अंतिम व्यक्ति का निजी जुड़ाव विकसित नहीं किया जाये, तब तक मजा नहीं है। बस यही सोच मेरे बिजनस माड्यूल का आधार बनी और मैंने सुदूर गांवों में इसकी शुरूआत की। वहां के लोगों खासकर महिलाओं को कारपेट बनाने की ट्रेनिंग दी, उन्हें अपना सेंटर संचालित करने के लिए सहयोग दिया, प्रौत्साहित किया और इतना अधिकार भी दिया कि वे अपना कारपेट खुद बेचें।इसका फायदा यह हुआ कि उन्होंने कारपेट के काम को 6 -8 घंटे की नौकरी तक नहीं लिया बल्कि अपना काम मानकर अधिकतम समय इस काम को दिया।इसी का नतीजा है कि राजस्थान के 42 गांवों में 350 लूम्स हम संचालित कर रहे हैं और एक हजार परिवार सीधे कारपेट बनाने से जुड़े हुए हैं।

एन के चौधरी कहते हैं कि हमारे जयपुर रग्स परिवार से जो आर्टिजन जुड़े हुए हैं वे कर्मचारी नहीं बल्कि अपनी लूम के ऑनर हैं और वहां जो बनाते हैं वह सीधे उपभोक्ता को बेचने के लिए अधिकृत हैं। इस तरह हमारा काम वीवर्स से कस्टमर तक सीधी एप्रोच वाला है।यही वजह है कि हमारे अधिकतर ग्राहक खुद इन गांवों में जाते हैं, बुनकरों से मिलते हैं, लूम पर काम होता देखते हैं और मनचाही डिजाईन भी करवा लेते हैं। जब कोई बायर किसी लूम पर जाता है तो फिर वह कारपेट थोड़े ही खरीदता है, वह तो बुनकर के ईमोशंस भी साथ में ले आता है, जिसे बुनकर अपने हुनर के जरिये कारपेट में समाहित करता है।यही सोच बायर के दिल में हो तो वह बुनकर के प्रति उदार भी बना रहता है।

एन के चौधरी का विजन है एक ऐसी सोसायटी विकसित करना जहां समानता हो, न्याया हो और सामाजिक आर्थिक विकास बेहतर हो।वे खुद को सोसायटी का एक सेवक मात्र मानते हैं और कहते हैं कि जब किसी वीवर के चेहरे पर खुशी आती है तो मरे लिए तो वही सबसे बड़ा मुनाफा है।उनका लक्ष्य है कि आने वाले समय के दौरान 40 हजार से अधिक वीवर्स के परिवारों तक खुशी फैले। पांच राज्यों राजस्थान के अलावा गुजरात, उत्तरप्रदेश, बिहार और झारखंड में जयपुर रग्स काम कर रही है। वे कहते हैं कि हमारा आर्टिजन इतना समृद्ध है कि हम समुचित ध्यान ही नहीं दे पा रहे।देश में एक करोड़ से अधिक लोग इस आर्टिजनशिप का काम करते हैं और उनके पास जो स्किल हैउसका मुकाबला नहीं।इनके आर्टएवं क्राफ्ट वर्क के निर्यात से हम अरबों रुपये अर्जित कर सकते हैं, लेकिन इसके लिए कारोबारी नहीं बल्कि नेकनीयति वाली एप्रोच से काम हो तो पार पड़े। हम अपने वीवर के लिए केवल बिजनस ओरियेंटेड अप्रोच से ही जुड़े हुए नहीं हैं, बल्कि उनकी सेहत का भी पूरा ख्याल रखते हैं, एक निश्चित अवधि के भीतर उनके लिए मेडिकल कैंप भी लगवाते हैं, अन्य एक्टीविटीज भी संचालित करते हैं।

इस तरह हुआ जुड़ाव

जयपुर जिले के 40 से अधिक गांवों में जयपुर रग्स के वीवर्स से समन्वय करने वाले हरफूल भाई कहते हैं कि वे अचरोल के पास के निवासी हैं और अपने ननिहाल में उन्होंने कारपेट वीविंग का काम सीखा था। एक दिन एन के चौधरी साहब से मुलाकात हुई, उन्होंने साथ काम करने के लिए आमंत्रित किया।काम नौकरी सरीखा नहीं बल्कि खुद के साथ जोड़ कर चलने का था। दो लूम और चार वीवर्स के साथ शुरूआत की और 6 माह में 8 0 लूम्स तक पहुंच गये।लूम लगाने के बाद हमने क्वालिटी पर फोकस किया, क्योंकि हमारे यहां क्वालिटी अगर ठीक नहीं होती थी, तो डिफैक्ट का पैसा कट जाता था। इसलिए बुनकरों को यहीं प्रेरित किया कि डिफैक्ट क्रियेट मत करो और इसका जो पैसा कटता है वह हमें बचाना है।यहां बुनकरों ने ध्यान देना शुरू किया और जीरो डिफेक्ट कारपेट तैयार करने लगे।इससे बुनकरों को अच्छा पैसा मिला और वे जुड़े हुए हैं। वे कहते हैं कि लंबे समय से वे जयपुर रग्स के साथ हैं। कभी लगा ही नहीं कि नौकरी सरीखा कुछ है बल्कि अपने काम जैसा लगता है।कहते हैं मेरा काम कार्डिनेशन का है, हर वीविंग सेंटर पर जाता हूं और वहां कोई भी दिक्कत हो उसे सोल्व करता हूं।इस काम में आकर यह सीखा कि काम से यदि प्रेम है तो काम भी आपको उसके अनुरूप नतीजे देता है और काम से प्रेम नहीं है तो फिर कुछ भी नहीं है।हम वीवर्स का दुख-दर्द भी देखते समझते हैं, उनके दिक्कत आती है और काम का टाईम हो तो हम खुद भी उसके साथ वीविंग में जुट जाते हैं अर्थात उसके हिस्से का काम कर सहारा दे देते हैं। इससे वीवर हमारे साथ आत्मसात रहता है। यह एक ऐसा बिजनस मॉडल है जो हर्टको हर्टको कनेक्ट रखता है और यही सही नतीजे भी देता है।

काम की छूट ऐसी कि पूछिये मत : शांति

जयपुर रग्स से जुड़ी हुईहैं शांति।वे कहती हैं कि कोई और सेठजी होते तो अपनी डिजाईन भेजते और उसे बनवाते, लेकिन जयपुर रग्स वाले चौधरी साहब ने हमें अपनी सोच के अनुसार डिजाईन करने की छूट दी है।यह एक नये सोच वाली बात है।इस काम को मनचाहा नाम दिया गया है।शुरू-शुरू में जब यह प्रस्ताव आया तो डर लगता था कि कहीं गलत-सलत नहीं बन जाये।लूम पर बैठते तो 8 -10 दिन तक तो तने भी नहीं लगते थे। साथ काम करने वाली भी नक्शे मांगती थी कि डिजाईन का नक्शा दो।पर हमने आस-पास के वातावरण को ही डिजाईन के रूप में देखा और शुरूआत कर दी।उसका इतना बढ़िया रेस्पोंस मिला कि पूछिये मत।बस तब से मनचाहा हम सबके लिए वास्तव में मनचाहा हो गया।अब साथ काम करने वाली बुनकरों की दिलचस्पी भी मनचाहा में है और एक से एक शानदार डिजाईन निकल कर सामने आ रहे हैं।

बात मायादेवी की

मायादेवी के लिए जयपुर रग्स एक परिवार की तरह है, कहती हैं कि 25 वर्षसे जुड़ाव है। उनका मायका झाड़ली गांव में था, वहां यह काम सीखा था। उसके बाद 7-8 वर्ष कहीं और काम किया, लेकिन जयपुर रग्स से आने के बाद जीवन धारा ही बदल गई।बल्कि काम एक नशा सा लगता है।वे एक ट्रेनिंग सेंटर चलाती हैं, जहां 20 से अधिक महिलाएं 4 लूम पर ट्रेनिंग ले रही हैं। इन महिलाओं के बच्चे भी साथ आते हैं, जिनके लिए बाकायदा खेलने, खाने-पीने की व्यवस्था भी की हुईहै। वे एक घंटे के भीतर नया काम सीखने वाले को फंदा डालना सिखा देती हैं। साथ ही जीरो डिफैक्ट कारपेट बनवाने में उनकी मास्ट्री है।

एक अवधारणा हुनर हाट की

जयपुर रग्स ने एक अवधारणा हुनर हाट की भी प्रमोट की है, जो कि गांव आसपुरा जिला जयपुर में संचालित की जा रही है।इस हुनर हाट की खास बात यह है कि इसमें स्कूली बच्चे आते हैं और सबको अपने हिसाब से क्रियेशन के लिए अवसर दिया जाता है, साधन सुलभ कराये जाते हैं, जिसका जो मन है वह उसे करने दिया जाता है। छह कंप्यूटर भी लगाये हुए हैं, जिसका बेसिक ज्ञान बच्चों को हो गया है और वे कंप्यूटर पर बैठे-बैठे कई तरह का आर्ट-वर्क डिजाईन आदि कर लेते हैं।इतना ही नहीं क्राफ्ट और आर्टमें भी कईतरह के प्रयोग करते हैं।इंटरनेट पर आर्ट और क्राफ्ट के नये वर्क को देखते हैं और फिर अपने आस-पास मौजूद वस्तुओं से कुछ उस तरह का और कुछअलग तरह का बनाने की कोशिश भी करते हैं। यूं यह हुनर हाट सुबह खुद जाती है, लेकिन चूंकि गांव की स्कूल का समय 10 बजे से 4 बजे तक रहता है, अत: बच्चे सामान्यत: 4 बजे आ जाते हैं और शाम 7-8 बजे तक यहां कुछ न कुछ सीखते रहते हैं। इस हुनर हाट परिसर के पास ही एक वालीबाल मैदान भी बना रखा है, जहां बच्चों को वाली बाल सिखाया और खिलाया जाता है। खास बात यह है कि 8 -10 साल के बच्चे भी यहां फोटो-शाप से डिजाईन कर लेते हैं, माइक्रोसाफ्ट की एप्लीकेशन भी सीख रहे हैं। नौएडा से एक एनजीओ लर्निंग स्पेस से आये अजय उदयन यहां बच्चों के लिए गाईड का काम करते हैं।

ब्रीफकेस...

राज्य में फुटबाल की श्रेष्ठ प्रतिभाओं को तलाशकर तराशेगी ज़िंक अकेडमी

उदयपुर/नि.सं.। हिंदुस्तान जिंक ने राजस्थान फुटबाल संघ के साथ व्यापक फुटबाल प्रोजेक्ट 'जिंक फुटबाल यूथ टूर्नामेंट' के आयोजन की घोषणा की। इस टूर्नामेंट के आयोजन का मकसद राज्य में फुटबाल की श्रेष्ठ प्रतिभाओं को तलाशना और उन्हें प्रोमोट करना है। जिंक फुटबाल यूथ टूर्नामेंट का पहला संस्करण छह महीने तक चलेगा। इस टूर्नामेंट में राज्य के 33 जिलों की टीमें हिस्सा लेंगी।

दो रिटर्न फाइल नहीं करने पर ई-वे बिल ब्लॉक हो जाएगा

उदयपुर/नि.सं.। अर्थव्यवस्था में हो रहे व्यापक बदलावों को लेकर चार्टर्ड एकाउंटेंट्स का दो दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन हुआ जिसमे देशभर के 1400 से अधिक चार्टर्ड एकाउंटेंट्स ने भाग लिया। प्रमुख वक्ता ने कहा कि दो रिटर्न फाइल नहीं करने पर इ-वे बिल ब्लॉक हो जाएगा। रिवर्स चार्ज और इनपुट क्रेडिट के प्रावधानों को भी समझाया। बैंगलोर के सीए सौरभ गोयनका, दीपाली माहेश्वरी ने बताया कि वर्तमान परिदृश्य में अंकेक्षण में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की महत्ती जरूरत है। सीए मनीश बंब ने कहा कि चार्टर्ड एकाउंटेंट्स में थोड़ी भी प्रोफेशनल इथिक्स व नियमों की अवहेलना करने पर भारी अनुशासनात्मक कदम का सामना करना पड़ सकता है। अहमदाबाद के एडवोकेट निपुन सिंघवी ने इन्सोलवेंसी कोड मे चार्टर्ड एकाउंटेंट्स के लिए उपलब्ध नए अवसरों के बारे में बताया।

बढ़ती जनसंख्या के अनुरूप गुणवत्तायुक्त खाद्य सामग्री उपलब्ध करवाना चुनौती

बीकानेर/नि.सं.। स्वामी केशवानंद राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय में 'डिजिटल न्यूट्रिशन फेर रिसोर्स कंजर्वेशन इन एरिड एग्रो सिस्टम' विषयक इक्कीस दिवसीय शीतकालीन प्रशिक्षण (विंटर स्कूल) का समापन हुआ। समापन सत्र की अध्यक्षता कुलपति प्रो. आर. पी. सिंह ने की। उन्होंने कहा कि बढ़ती जनसंख्या के अनुरूप गुणवत्तायुक्त खाद्य सामग्री उपलब्ध करवाना तथा कृषि को व्यवसाय के रूप में स्थापित करना आज सबसे बड़ी चुनौती है। कृषि वैज्ञानिकों को इस दिशा में मंथन करना होगा। उन्होंने कहा कि उत्पादन बढ़ाने के लिए खेतों में कृषि रसायनों का भरपूर उपयोग हो रहा है। इससे भूमि की उर्वरा शक्ति प्रभावित हुई है और मानव स्वास्थ्य पर इसका सीधा असर पड़ रहा है।

वंडर सीमेंट के साथ फूलों से महकेगी फतहसागर पाल

उदयपुर/का.सं.। जिला प्रशासन एवं युआईटी, उदयपुर के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित फ्लॉवर शो में वंडर सीमेंट लि., निम्बाहेड़ा द्वारा लगाई गई विभिन्न प्रजातियों के रंग-बिरंगे फूलो से सजी बेटी बचाओं, बेटी पढ़ाओं की थीम पर आधारित फ्लॉवर प्रदर्शनी का शुभारम्भ 25 दिसंबर को कम्पनी के निदेशक परमानन्द पाटीदार एवं उपाध्यक्ष (वाणिज्य) नितिन जैन द्वारा किया गया। इस अवसर पर वंडर सीमेंट के कार्यकारी निदेशक संजय जोशी ने बताया की शहर की फतहसागर पाल पर आयोजित इस प्रदर्शनी में कम्पनी द्वारा वर्ष 2016 से हर वर्ष आकर्षक प्रदर्शनी का आयोजन किया जा रहा है तथा इस वर्ष वंडर सीमेंट की फ्लॉवर एक्सपो बेटी बचाओं, बेटी पढ़ाओं की थीम पर आधारित हैं, इस फ्लावर शो के माध्यम से वंडर सीमेंट बेटियों के प्रति जागरूकता पैदा करने, बेटियों को बचाने एवं उनके सशक्तिकरण के लिए लोगों को जागरुक कर रहा है।

पाली के निकट पिछले पांच वर्षों से वीरान पड़ी आवासीय योजना

राजीव विहार के आबाद होने की उम्मीद जगी

पाली/निजी संवाददाता। पाली शहर के रामासिया के निकट पिछले पांच सालों से वीरान पड़ी राजीव विहार आवासीय योजना के एक बार फिर आबाद होने की उम्मीद जगी है। इनकम टेक्स विभाग ने यहां कार्यालय व कर्मचारियों के लिए कॉलोनी विकसित करने की इच्छा जताते हुए नगर परिषद में भूखण्ड उपलब्ध करवाने के लिए लिखा है। ऐसा होता है तो पिछले कुछ वर्षों से वीरान पड़ी राजीव विहार आवासीय कॉलोनी आबाद हो सकेगी तथा भूखण्ड बिक्री से नगर परिषद के खजाने में भी करोड़ों रुपए आ सकेंगे।

नगर परिषद से मांगे 50 भूखण्ड :

नगर परिषद को इनकम टेक्स ऑफिस से प्राप्त पत्र में यहां इनकम टेक्स कार्यालय विकसित करने के लिए भूखण्ड की डिमांड की गई। इसके साथ ही इनकम टेक्स कॉलोनी विकसित करने के लिए भी 50 भूखण्डों की डिमांड की गई है। इसको लेकर नगर परिषद कार्रवाई में जुटी है। यहां इनकम टेक्स कॉलोनी व कार्यालय विकसित होता है तो वीरान पड़े राजीव विहार आबाद हो सकेगा तथा योजना के तहत शेष पड़े भूखण्डों की भी बिक्री भी हो सकेगी।

राजीव विहार योजना एक नजर :

शहरी क्षेत्र में आवास समस्या को देखते हुए जिला प्रशासन की ओर से सुमेरपुर रोड रामासिया के निकट नगर परिषद की ओर से 263.19 बीघा भूमि पर 1130 भूखण्डों की राजीव विहार आवासीय योजना विकसित की गई थी। गत सभापति केवलचंद गुलेच्छा के कार्यकाल के दौरान अक्टूबर 2013 में मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने राजीव विहार आवासीय कॉलोनी का उद्घाटन भी किया था। लॉटरी से 550 से अधिक भूखण्डों की बिक्री भी की गई लेकिन अभी तक किसी ने भी यहां आवास नहीं बनाया। जिसका मुख्य कारण शहर से दूरी बताई जा रही है।

राजीव विहार पर खर्च हुए थे चार करोड़ : नई पाली आवासीय योजना विकसित करने के लिए यहां स्वागत द्वार, चारदीवारी, सीवर लाइन बिछाने का काम, मुख्य सडक़ से गेट तक डामर सडक़ का निर्माण कार्य, पौधरोपण, नाडी विकसित करने का कार्य, सामुदायिक भवन, लांचिग पेड, विद्युत पोल, रोड लाइट, बगीचे की चारदीवारी, डब्ल्यूबीएम सडक़ निर्माण, नाला निर्माण, कार्यालय भवन आदि विकसित करने पर करीब चार करोड़ रुपए खर्च किए गए थे।

राजीव विहार की वर्तमान स्थिति : राजीव विहार में लगाई गई कई रोड लाइट गायब हो गई है तो कई लाइट्स खराब पड़ी है। लॉचिंग पेड व स्वागत द्वार तक क्षतिग्रस्त हो चुके है। पूरे परिसर में जगह-जगह झाडिया उग गई है। बिजली के तार भी कई जगह से टूट गए है। वर्तमान में शाम ढलने के बाद यहां नशेडियों का डेरा रहता है। वर्तमान में यहां एक गार्ड तक तैनात नहीं है।

इनकम टेक्स विभाग ने मांगे भूखण्ड

इनकम टेक्स विभाग की ओर से पत्र मिला है। जिसमें राजीव विहार आवासीय योजना में ऑफिस विकसित करने एवं कॉलोनी विकसित करने के लिए 50 भूखण्ड की डिमांड की है। इसको लेकर कार्रवाई शुरू कर दी है। – रेखा भाटी, सभापति नगर परिषद, पाली

आशापूर्णा बिल्डकॉन ने सफलतापूर्वक पूरे किये 23 वर्ष

जोधपुर/नि.सं.। आशापूर्णा बिल्डकॉन लि. ने अपने सम्पूर्ण 23 वर्ष सफलता के साथ सम्पन्न कर लिये है। कम्पनी के सेल्स एण्ड मार्केटिंग डीजीएम अरविंद सिंह भाटी ने बताया कि सीएमडी करण सिंह उचियारडा ने 23 दिसम्बर, 1996 में इसी जूनून और मन में उमंग लिए आशापूर्णा बिल्डकॉन लि. का कारवां शुरू किया और उनके कुषल नेतृत्व और अपनी दूरगामी सोच से आज 23 वर्षो के उसी जुनून के साथ 'आशापूर्णा' एक वटवृक्ष का रूप ले चुका है। आशापूर्णा की शुरूवात उनकी व्यापारिक दूरदृष्टि की सोच एवम् भविष्य की संभावनाओं को ध्यान में रखते हुए की गई और साथ में अपनी दूरदृष्टि, कडी मेहनत और पक्के इरादे के बल पर एक बहुत बडा साम्राज्य स्थापित किया है। कम्पनी द्वारा बनाये गये सभी प्रोजेक्ट अपने आप में अत्यन्त महत्वपूर्ण साबित हुए है, तथा प्रत्येक प्रोजेक्ट सभी के द्वारा सराहे गये है। आशापूर्णा ने अपने प्रत्येक प्रोजेक्ट को 18 माह में पूर्ण कर ग्राहकों को समर्पित किया है। कम्पनी द्वारा निर्मित आवासीय कॉलोनियों में करीब 3000 परिवार रहकर अपनी जिन्दगी का आनन्द उठा रहे है। आशापूर्णा ने पूरे राजस्थान में में रियल एस्टेट सेक्टर को एक नया मुकाम दिया व प्रदेश की प्रथम सुव्यवस्थित व सुनियोजित टाउनशिप की शुरूवात की, जहॉ रिहायशी व कॉमर्षियल का सफल समायोजन किया गया। आशापूर्णा का सफलतम 32वां प्रोजेक्ट बसेरा की सुपुर्दगी समारोह पर इस बार भी सामाजिक सरोकार के तहत गरीबतम जरूरतमंद विधवा महिला को एक फ्लेट इसी प्रोजेक्ट में निशुल्क दिया जायेगा। आशापूर्णा ने पूर्व में भी इस तरह सामाजिक सरोकार के तहत अपनी भूमिका निभाई है।

जोधपुर, पाली एवं बालोतरा के अपशिष्ठ जल निष्कासित करने वाली इकाईयों के उद्यमियों की बैठक आयोजित

जोधपुर/नि.सं.। मरूधरा इण्डस्ट्रीज एसोसिएशन सभागार में जोधपुर, पाली एवं बालोतरा के अपशिष्ठ जल निष्कासित करने वाली इकाईयों के उद्यमियों एवं जोधपुर, पाली, बालोतरा एवं जसोल के औद्योगिक संगठनों के प्रतिनिधियों की बैठक राजसिको के पूर्व अध्यक्ष सुनील परिहार की अध्यक्षता में आयोजित हुई।

बैठक में राजसिको के पूर्व अध्यक्ष सुनील परिहार ने कहा कि जोधपुर, पाली एवं बालोतरा के उद्योगों के समक्ष समान समस्या है जिसका सभी उद्यमियों को संयुक्त रूप से संघर्ष कर राज्य सरकार के माध्यम से निराकरण कराने के लिए प्रयास किये जायेंगे। उन्होंने बताया कि देश के अन्य राज्यों में जल अपशिष्ठ के जो पर्यावरणीय मानक निर्धारित है, उसके अनुरूप राजस्थान में भी यहां की भौगोलिक परिस्थितियों को देखते हुए राज्य सरकार एवं राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मण्डल द्वारा केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण मण्डल एवं एनजीटी के समक्ष मजबूत पैरवी करते हुए जोधपुर, पाली एवं बालोतरा को पर्यावरणीय मानकों में रियायत प्रदान की जानी चाहिए जैसा कि अन्य राज्यों में हो रहा है ताकि इन उद्योगों के समक्ष दिन प्रतिदिन आ रही समस्याओं का स्थायी निराकरण हो सके। जोधपुर, पाली एवं बालोतरा के उद्यमियों एवं औद्योगिक संगठनों के प्रतिनिधियों की संयुक्त समन्वय समिति का गठन किया गया, जिसका समन्वयक उमेश लीला को बनाया गया। इस कमेटी में जोधपुर से एमआईए के अध्यक्ष ज्ञानीराम मालू सहित जसराज बोथरा, विष्णु मित्तल, जीके गर्ग, पाली से अरूण जैन, रवि मेहता, एसपी चौप ?ा, कमलेश जैन, बालोतरा से सुभाष मेहता, मनोज चौप ?ा, अशोक रंगवाला, नरेश ढेला?या, धनराज चौप ?ा, गनी मोहम्मद सुमरो, मंगलाराम टाक एवं जसोल के डूंगरचंद सालेचा, भरत मेहता, रतनलाल परिहार शामिल है। यह कमेटी जोधपुर, पाली एवं बालोतरा की भौगोलिक परिस्थितियों का अध्ययन करते हुए विस्तृत रिपोर्ट बनायेगी, जो कि राज्य सरकार एवं राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मण्डल के समक्ष नये पर्यावरणीय मानकों के निर्धारण के लिए पेश की जायेगी।

एमआईए के अध्यक्ष ज्ञानीराम मालू एवं सचिव मुकेश खत्री ने जोधपुर, पाली एवं बालोतरा के उद्योगों के समक्ष आ रही समस्याओं के दीर्घकालीन समाधान के लिए राज्य सरकार एवं राजस्थान राज्य प्रदूषण नियंत्रण मण्डल के समक्ष प्रस्ताव पेश किया जाये।